73

सारे ... से परमेश्वर से प्रेम रखना

मरकुस 12:29, 30, एक निकट दृष्टि

हमारा यह अध्ययन ''सबसे बड़ी आज्ञा'' के बारे में है।[1] आप पूछ सकते हैं, ''सबसे बड़ी आज्ञा क्या है?''एक बार एक शास्त्री ने यीशु के पास आकर उससे यही प्रश्न पूछा था। मसीह का उत्तर था:

> हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। जो दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं (मरकुस 12:29-31)।

यहां आपको मिलता है कि सबसे बड़ी आज्ञा परमेश्वर ने क्या दी है। यह मेरा या किसी अन्य नाशवान मनुष्य का विचार नहीं है, यह तो परमेश्वर के पुत्र का निर्विवाद कथन है।

एक पल के लिए, इस पद की बातों की तुलना आधुनिक धर्म से करें। कुछ लोगों के लिए, धर्म मन को शांत रखने और प्रतिष्ठा बढ़ाने का स्थान है। कई-कई जगह पर तो कलीसिया की सदस्यता बहुत अधिक है, परन्तु अपराध और बाल अपराध भी उतना ही अधिक है। उन स्थानों में, कलीसिया की सदस्यता तो बढ़ रही है, परन्तु इसके साथ ही नैतिकता और सदाचार में भी गिरावट आ रही है। बहुत से स्थानों में धर्म और जीवन का तलाक हो चुका है। कई लोग बाएं हाथ द्वारा किए जाने वाले धर्म के काम का दाएं हाथ को पता नहीं चलने देते।[2] यह मरकुस 12:29, 30 में मसीह की शिक्षा से बहुत अलग है।

इस शास्त्री को दिए गए यीशु के उत्तर में, हमें सच्ची मसीहियत का धुरा अर्थात *सारे* ... से परमेश्वर से प्रेम रखना मिलता है:

- ''अपने *सारे* मन से''-भावना का स्थान।
- ''अपने *सारे* प्राण से''-जीवन का स्थान।

- ''अपनी *सारी* बुद्धि से''–समझ का स्थान।
- ''अपनी *सारी* सामर्थ से''–ऊर्जा का स्थान।[3]

परमेश्वर के व्यक्तित्व के प्रति आपके व्यक्तित्व की पूर्ण प्रतिक्रिया अर्थात पूर्ण मनुष्य की सेवा यही है। परमेश्वर व्यक्ति का *सारा* कुछ या फिर उसका कुछ नहीं चाहता।

कोई पूछ सकता है, क्या परमेश्वर को हमसे ऐसी मांग करने का कोई अधिकार है? परमेश्वर हमसे ऐसा कुछ नहीं मांगता, जो वह देने को तैयार नहीं है। परमेश्वर ने *हम से* ''सारे ... से'' प्रेम किया है:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)।
>
> परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)।
>
> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा (1 यूहन्ना 4:9, 10)।

मसीह के क्रूस और जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, उन सब पर विचार करते हुए, हम कवि के साथ केवल इतना ही कह सकते हैं,

> इलाही प्यार अपना ले खास
> दिल जान, और मेरे सब अज़ीज़।[4]

अपनी सारी बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम रखना

हम सब की ''अपने सारे ... से प्रेम रखना'' में सहायता के लिए, आइए सबसे बड़ी आज्ञा के अलग-अलग पहलुओं पर विचार करते हैं। चलिए बुद्धि से आरम्भ करते हैं: ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से ... अपनी सारी बुद्धि से ... प्रेम रखना।'' बुद्धि का अर्थ समझ है, जो व्यक्ति का सोचने वाला भाग है। बुद्धि से ही लोग जानते हैं कि कितना आयकर चुकाना है।[5] बुद्धि से ही लोग महत्वपूर्ण आविष्कार करते हैं। बच्चों को स्कूल भेजकर हम उनकी बुद्धि को ही प्रशिक्षण देते हैं। परमेश्वर चाहता है कि नर हो या नारी, सब उसे अपना यही भाग समर्पित करें।

अपनी सारी बुद्धि से परमेश्वर से हम कई तरह से प्रेम रख सकते हैं। एक ढंग उसके वचन का मन लगाकर अध्ययन करने के द्वारा है। लूका ने मकिदुनिया में पौलुस की

मिशनरी गतिविधियों के बारे में लिखते हुए, यह पद शामिल किया: ''ये [बिरिया के] लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। पौलुस ने ऐल्डरों की योग्यताओं के बारे में तीतुस को लिखते हुए कहा कि एक ऐल्डर के लिए आवश्यक है कि वह ''विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके'' (तीतुस 1:9)। अपनी सारी बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम रखने वाला व्यक्ति बाइबल खोलकर कुछ समय हर दिन परमेश्वर के साथ बिताएगा। इसके अलावा वह प्रभु की कलीसिया की आराधना सभाओं में तथा बाइबल क्लासों में भी शामिल होगा, ताकि वह परमेश्वर की इच्छा को जान सके।

इसके अलावा–जो बहुत ही महत्वपूर्ण बात है, वह यह है कि वह अपने घर में इकट्ठे पढ़ने, इकट्ठे अध्ययन करने और इकट्ठे प्रार्थना करने के लिए अपने परिवार के लिए समय ठहराएगा। हर परिवार यदि अपने व्यस्त समय में आत्मिक अध्ययन तथा मनन के लिए समय निकाले तो हमारा संसार कितना सामर्थ से भर जाएगा। अपराध तथा इसकी रोकथाम पर नियुक्त एक प्रसिद्ध अधिकारी ने[6] कई साल पहले ये पंक्तियां लिखीं थीं:

> परिवार में पवित्र बाइबल पढ़ना अब पहले से भी अधिक आवश्यक हो गया है। यह परिवार को एक–दूसरे के निकट लाता है। यह हर सदस्य को जीने के लिए विश्वास देता है।
>
> एक छोटे लड़के के रूप में, जब मेरी मां बाइबल पढ़कर सुनाती और मुझे चलते–चलते कहानियों के अर्थ समझाती थी तो मैं उसके घुटनों पर बैठ जाया करता था। इससे हमारे बीच विश्वास का बन्धन मज़बूत हुआ। फिर, उन सुहानी रातों में जब मेरे पिता परिवार के सब लोगों को अपने आस–पास इकट्ठा करके बाइबल से वचन पढ़कर सुनाते थे तो कितना अच्छा लगता था। इससे परिवार की चर्चाएं हो जाती थीं जो दिलचस्प, सजीव और ज्ञानवर्धक होती थीं। इन समयों से मुझ में विश्वास की सामर्थ और प्रार्थना की सामर्थ पैदा हो गई, जो जीवन भर कठिन क्षणों में मुझे दृढ़ करती है।

हम जब समझदारी से योजना बनाकर सही निर्णय लेते हैं, तो अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर रहे होते हैं। दो प्रासंगिक वचन ये हैं: ''इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं'' (इफिसियों 5:15, 16)। ''इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो'' (मत्ती 6:33क)। परमेश्वर से प्रेम रखने वाला व्यक्ति उन कार्यों के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण हैं, समय *निकाल* लेगा, जैसे निजी प्रार्थना, दूसरों की सहायता करने और प्रभु के लिए कार्य करने के लिए, उसकी बुद्धि ''मेरे लिए जो सबसे अच्छा है'' का निर्णय करने के लिए नहीं, बल्कि ''परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के लिए सबसे

उत्तम'' पर ध्यान लगाएगी।

परमेश्वर से अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखने का एक विशेष ढंग उस बुद्धि को प्रभु की पूर्णकालिक सेवा के लिए देना है। कभी-कभी हम जवान लोगों को कही गई ऐसी बातें सुनते हैं: ''तुम्हारा दिमाग बहुत अच्छा है। तुम्हें डॉक्टर [या वकील, या इंजीनियर] बनना चाहिए।'' मसीही डॉक्टरों, मसीही व्यापारियों, मसीही वकीलों और अन्य कामों में मसीही लोगों की आवश्यकता है; पर पुरुषों तथा स्त्रियों, लड़कों व लड़कियों को पवित्र शास्त्र की बातें बताने के लिए पुलपिटों और क्लासरूमों में इससे भी बुद्धिमानों की और भी आवश्यकता है। वचन के सुनाने तथा सिखाने से बड़ा काम कोई नहीं है। वचन सुनाने तथा लोगों को सिखाने के लिए हमारे बीच में सबसे बुद्धिमान लोग होने आवश्यक हैं।

अपनी सारी बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम रखने पर विचार करते हुए, मैं एक चेतावनी देने के लिए रुकता हूं कि यह इस आज्ञा का केवल एक चौथाई भाग है। केवल बुद्धि पर ज़ोर देने से एक नीरस, बेकार की बहस करने वाला धर्म ही मिलेगा। कई ऐसे लोग हैं, जो बौद्धिक व्यायाम करते हुए रात भर यह बहस करते हैं कि एक कील पर कितने स्वर्गदूत आसानी से बैठ सकते हैं। परन्तु अक्सर धार्मिक विवादी ऐसे विषय पर विचार बहुत करता है, लेकिन काम कुछ नहीं करता। हम निश्चय कर लें कि परमेश्वर को अपनी बेहतरीन बुद्धि देंगे, पर यह भी याद रखें कि आज्ञा का यह भाग केवल अकेला नहीं है। यीशु ने इसे अपने प्रभु के प्रति पूरी तरह से समर्पित व्यक्ति के चित्र में पिरोया है।

अपने सारे मन से परमेश्वर से प्रेम रखना

इसके आगे, हम आज्ञा के इस भाग पर विचार करना चाहते हैं: ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से ... प्रेम रखना।'' बाइबल में ''मन'' शब्द का कई प्रकार से इस्तेमाल हुआ है। यह व्यक्ति की बुद्धि या उसकी इच्छा के लिए हो सकता है। परन्तु इस संदर्भ में यह *भावना* के स्थान अर्थात अनुभूति के केन्द्र के लिए है।

कई बार धर्म में हम भावना के महत्व को कम समझते हैं। शायद हमने कई धर्मों में पाई जाने वाली भावुकता पर प्रतिक्रिया दी है। भावनाओं को हम आवश्यकता से अधिक महत्व नहीं देना चाहते, परन्तु यह समझना भी आवश्यक है कि बिना उनके *चलना* भी नहीं है। इन शब्दों के सम्बन्ध पर विचार करें: भावना, उद्देश्य और संचालन शक्ति। कार में लगी मोटर [संचालन शक्ति] उसे चलने में सहायता करती है। जीवन का उद्देश्य भी यही काम करता है और उद्देश्य के पीछे भावना है।

''जोश'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द "enthusiasm" दो यूनानी शब्दों से निकला है, जिनका मूल अर्थ ''परमेश्वर में'' या ''[हम] में परमेश्वर'' है। यदि हम परमेश्वर में हैं और परमेश्वर हम में है (1 यूहन्ना 4:16), तो हमें जोश से भरे होना आवश्यक है; हमें उत्साही भावना से भरे होना आवश्यक है। डेविड लिप्सकौम्ब[7] को जानने वाले अच्छा कहते थे कि उन्होंने उसे केवल एक ही बार रोते हुए देखा था और यह रविवार सुबह उस समय हुआ जब भाई लिप्सकौम्ब प्रभु की मेज़ की ज़िम्मेदारी निभा रहे थे। उन्होंने प्रभु-

भोज के महत्व पर संक्षिप्त शब्दों में बताया और फिर बातें करते हुए, फूट पड़े, और अपनी बात भी पूरी न कर पाए। भाई लिप्सकौम्ब ने वे आंसू अपनी बुद्धि से नहीं, बल्कि मन से बहाए थे।

बहुत पहले, राजा दाऊद ने पुराने नियम के सबसे शक्तिशाली पदों में से कुछ पदों का वर्णन किया था। आज भी हम उसके लिखे भजन पढ़कर उन्हें पसन्द करते हैं। हम पर उनका प्रभाव दाऊद के मन से लिखने के कारण है। ''उसने अपनी भावना की गहराई में से तरल आग के पद उण्डेल दिए और आज भी वे हमारे मनों में आग लगा देते हैं।''[8]

अपने सारे मन से परमेश्वर से प्रेम करने का क्या अर्थ है ? हम परमेश्वर से अपने सारे मन से प्रेम रखते हैं ...

- जब हम परमेश्वर की आज्ञा इसलिए नहीं मानते कि हमें माननी चाहिए, बल्कि इसलिए मानते हैं कि हम मानना चाहते हैं।
- जब हम परमेश्वर के बराबर किसी और से प्रेम नहीं रखते और न उसके सम्बन्ध से बढ़कर किसी और सम्बन्ध से।
- जब हम सबसे बढ़कर परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

इसके अलावा, हम परमेश्वर से अपने सारे मन से तब प्रेम रखते हैं, जब आवश्यकता पड़ने पर उसकी बेहतर सेवा के लिए हम *सब कुछ छोड़ देने* को तैयार हों। हमें ...

- अब्राहम की तरह अपने प्रियजनों को छोड़ देने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- अय्यूब की तरह, सम्पत्ति छोड़ देने को तैयार रहना चाहिए।
- मूसा की तरह, भोग विलास छोड़ देने को तैयार रहना चाहिए।

फिर, हम अपने सारे मन से परमेश्वर को तभी प्रेम करते हैं, जब परमेश्वर के लिए *कुछ भी करने* को तैयार होते हैं:

- दाऊद की तरह मन फिराने को तैयार हों।
- पिन्तेकुस्त के दिन वाले यहूदियों की तरह बपतिस्मा लेने को तैयार हों।
- पौलुस की तरह शरीर देने को तैयार हों।
- दोरकास की तरह सेवा करने को तैयार हों।
- जक्कई की तरह देने को तैयार हों।

कलीसिया को भावना की, मन की और सेवा की आवश्यकता है। परन्तु एक बार फिर एक चेतावनी भी आवश्यक है। कुछ लोगों ने धर्म में सब कुछ शामिल करने के लिए भावनाओं और अनुभूतियों को अनुमति दी है। भावनाओं से चलने वाले लोग सतही भूमि

की तरह हैं, जिस पर बीज गिरा था। जड़ न होने के कारण, उसकी कोंपलें तो निकलीं पर जल्दी ही मुरझा गईं (मत्ती 13:6)। आज बहुत से लोगों का मत है कि जब तक कोई बात उन्हें अन्दर तक हिलाती है, यानी अगर वे इसके बारे में बहुत मजबूत भावना रखते हैं, तो यह परमेश्वर को स्वीकार होनी चाहिए। पर बात ऐसी नहीं है। साम्प्रदायिक संसार आत्मा की बातें कई बार करता है, पर परमेश्वर की आज्ञाओं से जुड़े रहने के प्रति लापरवाह है (देखें रोमियों 10:2)।

सबसे बड़ी आज्ञाएं देकर यीशु ने संकेत दिया कि बुद्धि और मन, भावना और समझ का मेल होना आवश्यक है। हमने भावनाओं की तुलना कार की मोटर से की थी, पर समझ की तुलना कार के स्टेयरिंग से की जा सकती है। कार के अपने गन्तव्य तक पहुंचने के लिए दोनों की आवश्यकता होती है। अच्छी मोटर वाली कार बिना स्टेयरिंग के बहुत दूर तो जा सकती है, पर कौन जाने कि वह कहां जाएगी? दूसरी ओर, बिना मोटर के स्टेयरिंग वाली कार कहीं भी नहीं जा सकती। कार में दोनों का होना आवश्यक है। इसी प्रकार, पमरेश्वर जिस धर्म की इच्छा करता है, उसमें बुद्धि और मन दोनों का होना आवश्यक है। बुद्धि पिता की इच्छा को सीखती और हमें उसकी ठहराई हुई सीमा से बाहर नहीं जाने देती है। फिर मन भावनाओं को उकसाता और जोश दिलाता है, जिससे हम, परमेश्वर की सीमाओं में रहते हुए सर्वशक्तिमान की आराधना और सेवा करते हैं। आइए हम अपने *सारे* मन और अपनी *सारी* बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम रखने की कोशिश करें।

अपनी सारी शक्ति से परमेश्वर से प्रेम रखना

यीशु ने यह भी कहा, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से ... अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'' व्यक्ति की शक्ति में उसकी योग्यता और उसकी ऊर्जा होती है। अभी तक हमने बुद्धि (समझ के केन्द्र) और मन (भावनाओं के केन्द्र) से परमेश्वर से प्रेम रखने पर चर्चा की है, पर होते दोनों ही व्यक्ति के अन्दर हैं। यदि हम सचमुच प्रभु से प्रेम रखते हैं, तो उस प्रेम को *व्यक्त किया* जाएगा: उसे काम के द्वारा दिखाया जाएगा, आज्ञाकारिता में दिखाया जाएगा।

मसीहियत *व्यावहारिक* धर्म है। मसीह ने कहा, ''जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, *कहता है,* उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर *चलता है*'' (मत्ती 7:21)। याकूब ने लिखा है, ''परन्तु वचन पर *चलने वाले* बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)। पौलसु ने इसे इस प्रकार कहा है ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला, जो उस ने देह के द्वारा *किए हों,* पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)। जो व्यक्ति अपनी शक्ति को परमेश्वर की सेवा में इस्तेमाल करने को तैयार नहीं है, वह स्वर्ग के राज्य के योग्य नहीं है।

हम परमेश्वर से अपनी सारी शक्ति से प्रेम कैसे रखते हैं? पहले, हम अपनी सारी शक्ति से परमेश्वर से प्रेम तब रखते हैं, जब हम *जो कुछ हमारे पास है,* उसका इस्तेमाल

उसके लिए करते हैं। योग्यता के साथ अवसर दोनों मिलकर ज़िम्मेदारी बन जाते हैं। तय कर लें कि आज आप अपनी योग्यता और ऊर्जा को प्रभु की सेवा में सबसे अच्छे ढंग से कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं। कहते हैं कि हम सब में अपनी क्षमता से दस गुणा अधिक क्षमता होती है। मसीह के लिए अपनी क्षमता बढ़ाने की पूरी कोशिश करें।

इसके अलावा, जैसा कि पहले भी सुझाव दिया गया है, हम परमेश्वर से अपनी सारी शक्ति से तभी प्रेम रखते हैं जब हम कार्य के द्वारा अपने मनों से प्रेम को दिखाते हैं। साफ़-साफ़ कहें तो हमें प्रभु के लिए *काम करना* आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 15:58)। किसी धार्मिक अगुवे को उसके डॉक्टरों द्वारा बताया गया कि उसे काम कम कर देना चाहिए। उसने उत्तर दिया, ''मैं मरने के पांच मिनट बाद विश्राम करना आरम्भ करूंगा।'' पिछली एक पीढ़ी के एक प्रसिद्ध सुसमाचार प्रचारक ने एक बार कहा था कि वह बूढ़ा नहीं होना चाहता और मसीह की सेवा करते-करते ही मरना चाहता है। मुझे गलत न समझें; हम में से हर किसी को समय-समय पर विश्राम की आवश्यकता होती है (मरकुस 6:31)। मेरे कहने का अर्थ यह है कि जंग लग जाने से तो अच्छा है कि जब तक हो सके काम करें।

अन्त में हम अपनी सारी शक्ति से तब प्रेम रखते हैं, जब हम अपनी बेहतरीन चीज़ें परमेश्वर को देते हैं। बहुत बार हम प्रभु के साथ वैसे व्यवहार करते हैं, जैसे मेरे परिवार के लोग अपने बूढ़े कुत्ते के साथ करते थे: हम उसे बचे-खुचे टुकड़े देते हैं। परमेश्वर को हमारा समय, धन, योग्यता और ऊर्जा बुढ़ापे में नहीं चाहिए। वह चाहता है कि हम अपना उत्तम भाग उसे दें (मत्ती 6:33)। परन्तु अपना उत्तम भाग उसे हम तभी दे सकेंगे, जब हम उसे अपनी सारी शक्ति से प्रेम करते हों।

परमेश्वर से अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना उसकी बात पूर्ण तौर पर मानने का भाग होना आवश्यक है। शिमशोन परमेश्वर से अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखता था, पर वह अपने मन और अपनी बुद्धि से प्रेम न रख पाया। अपनी शक्ति से दिखाया गया प्रेम समझ और भावनाओं से प्रेरित अगुआई में होना आवश्यक है। परन्तु यह न भूलें कि मसीह के लिए काम करना हमारे प्रेम की सच्चाई का संकेत देता है।

अपने सारे प्राण से परमेश्वर से प्रेम रखना

अन्त में, हम देखते हैं कि यीशु ने कहा, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से ... अपने सारे प्राण से ... प्रेम रखना।'' मसीह की सूची में प्राण दूसरे नम्बर पर था, और मैंने इसे अन्त में रखा है, क्योंकि यह पिता के प्रति हमारे आज्ञा मानने के सार के रूप में काम कर सकता है।

यूनानी शब्द का अनुवाद ''प्राण'' (अंग्रेज़ी शब्द ''*soul*'') *psuche* है, जिसे *psyche*[9] भी लिखा जाता है, जिससे हमें मनोविज्ञान के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''साइकोलॉजी'' जैसे शब्द मिले हैं। कई बार नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल ''मन'' या ''हृदय'' के समान शब्दों में हुआ है-व्यक्ति के विचार या भावना के भाग के रूप में। हम में से कइयों के लिए ''सोल'' आत्मा या मनुष्य के अनन्त भाग का पर्यायवाची है। परन्तु मरकुस

12:29, 30 में इस शब्द को बुद्धि और समझ से अलग दिखाया गया है और उनके समानान्तर के रूप में दिया गया है।[10] इस तथ्य में कि *psyche* का अनुवाद आम तौर पर ''जीवन'' या लाइफ शब्द से होता है, अगले प्रसिद्ध पदों पर ध्यान दें। इनमें से प्रत्येक में ''प्राण'' शब्द का अनुवाद *psyche* से किया गया है:

> इसलिए मैं तुम से कहता हूं, अपने *प्राण* के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे; और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? (मत्ती 6:25)।
>
> इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना *प्राण* दे (यूहन्ना 15:13)।
>
> ... जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने *प्राण* दे (मत्ती 20:27, 28)।

इन पदों में, *psyche* शब्द का अर्थ मनुष्य का प्राण है। मेरे लिए परमेश्वर से ''अपने सारे प्राण से'' प्रेम रखने का अर्थ अपने सारे तन, मन और धन के साथ उससे प्रेम रखना है यानी जो कुछ हमारे पास है, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हम हो सकते हैं, उन सबसे बढ़कर प्रेम रखना।

अभी-अभी ध्यान दिए गए पदों से इशारा पाकर अपने जीवनों से परमेश्वर से प्रेम रखने के लिए इस सांसारिक जीवन की भौतिक वस्तुओं से बढ़कर परमेश्वर को महत्व देना है। इसका अर्थ आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए अपना जीवन बलिदान करने को भी तैयार रहना-और उसकी और सारी मनुष्यजाति की सेवा में अपना जीवन देने को तैयार रहना है। अपने सारे प्राण से परमेश्वर से प्रेम रखने का अर्थ अपना मन, देह, और प्राण सब पूरी तरह से उसे सौंप देना है। जैसे एक महान पथप्रदर्शक प्रचारक टी.बी. लैरीमोर इसे इस प्रकार कहा करते थे, ''बुद्धि, शक्ति और धन; समय, जीभ और गुण; सिर, हाथ और हृदय; देह, प्राण और आत्मा'' अर्थात सब कुछ अपने प्रभु के लिए समर्पित करना आवश्यक है।

सारांश

पूर्ण व्यक्ति का धर्म यही है: ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना'' (मरकुस 12:30)। एक श्रमिक अपने हाथों का इस्तेमाल करता है। कारीगर अपने हाथों और सिर दोनों का इस्तेमाल करता है। कलाकार अपने हाथों, सिर और मन का इस्तेमाल करता है। मसीही व्यक्ति *परमेश्वर के लिए* अपने हाथों, अपने सिर, अपने मन और अपने जीवन का

इस्तेमाल करता है। मरकुस 12:30 प्रभु को पूर्णतया समर्पित व्यक्ति का चित्र है।

बपतिस्मे के समय, लोगों में बहुत बड़ा अन्तर होता है। एक व्यक्ति प्रभु द्वारा दी गई आज्ञाओं को मानने के लिए उसे ग्रहण करता है, परन्तु इन आयतों में दर्शाए गए प्रेम की गहराई को समझे बिना जिनका हमने अभी अध्ययन किया है, वह आज्ञाओं को ऐसे ही मानता है जैसे आया हुआ बिल चुका रहा हो। यह तो ऐसा ही है जैसे कागज़ पर एक लिस्ट बनी हो: ''मुझे विश्वास करना है, फिर मन फिराना है, फिर अंगीकार करना है और उसके बाद बपतिस्मा लेना है।'' वह तर्कसंगत रूप से अनन्तकाल के लिए नाश होने से बचने के लिए इनमें से हर एक बात क्रमबद्ध ढंग से करता है।

क्रमबद्ध ढंग से मानी जाने वाली इस आज्ञा की तुलना वचन में सुझाए गए, मन से आज्ञापालन से करें: एक और व्यक्ति *मसीह को अपना आप देने* के इसी निमन्त्रण को स्वीकार करता है। उसका उद्देश्य परमेश्वर के लिए प्रेम था, जो उसे अपने पापों से मन फिराने, लोगों के सामने अपने विश्वास का अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने के लिए तैयार करता है।[11] उसकी आज्ञाकारिता शर्तों को पूरा करने की बाध्यता के कारण नहीं, बल्कि अपने आप को परमेश्वर के सामने खाली करना है। वह कुछ भी पीछे नहीं रखता; सब कुछ सौंप देता है, और वह बनने की उस परमेश्वर से आशा करता है, जिसने उसे बनाया। *यही* यीशु की इच्छा है।

यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया है या आप परमेश्वर के भटके हुए बालक हैं, जिसे घर वापसी की आवश्यकता है[12] तो मेरी प्रार्थना है कि प्रेम से भरे मन से निकलने वाली आज्ञाकारिता में आप यह अवश्य करेंगे।

टिप्पणियां

[1]यह प्रवचन बैटसेल बैरट बैक्स्टर, ''द ग्रेटैस्ट कमांड ऑफ ऑल,'' *इफ़ आई बी लिफ़्टड अप* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1956), 9-18 पर आधारित है। [2]यह रूपक मत्ती 6:3 की शब्दावली पर आधारित है। [3]''सारे'' शब्द को इस पर ज़ोर देने के लिए इटैलिक किया गया है। [4]आइज़क वाट्स, के गीत ''व्हेन आई सर्वे द वंडरस क्रॉस,'' का हिन्दी रूप। [5]अपने इलाके के हिसाब से बुद्धि के इस्तेमाल पर उदाहरण दें। [6]यह उद्धरण जे. एडगर हुवर का माना जाता है, जो कई वर्ष एफ़बीआई (अमेरिका की फैडरल ब्यूरो ऑफ़ इनवैस्टिगेशन) के निर्देशक रहे। पहले यह उद्धरण चर्च बुलेटिनों में आम तौर पर मिलता था। इसके मूल स्रोत का पता नहीं है। [7]प्रभु की कलीसिया के एक सदस्य डेविड लिप्सकौम्ब *द गॉस्पल एडवोकेट* प्रकाशन के आरम्भिक सम्पादकों में से थे। नैशविल्ले, टैनिसी की डेविड लिप्सकौम्ब यूनिवर्सिटी उन्हीं के नाम पर है। [8]बैक्स्टर, 15. [9]इसे साइकी पढ़ा जाता है ''P'' आवाज़ नहीं देता। [10]''Psyche'' को किसी व्यक्ति के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है (''मनुष्यों''; प्रेरितों 2:41. [अंग्रेज़ी बाइबल में यहां ''souls'' है, जिसका अनुवाद हिन्दी बाइबल में कई जगह प्राण हुआ है-अनुवादक])। और कई परिभाषाएं दी जा सकती हैं, पर समझाने के लिए इतना ही काफ़ी है।

[11]किसी समय आपको ऐसे पद देने पड़ सकते हैं, जिनमें विश्वास, मन फिराव, अंगीकार तथा बपतिस्मे की आज्ञा है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:39; रोमियों 10:9, 10)। [12]प्रभु के पास वापस आने के पद दिए जा सकते हैं (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।